

# मध्यकालीन भारत

अंक : छह

संपादक

इरफ़ान हबीब



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली - पटना

## फ़तेहपुर सीकरी की पुनर्यात्रा : कुछ इमारतों की व्याख्या

सैयद अली नदीम रिज़्वी

चार ज़िल्लों में ई डब्ल्यू स्मिथ की यादगार रचना के बाद अकबर के शाही नगर फ़तेहपुर सीकरी पर बहुत-कुछ लिखा जा चुका है। विभिन्न पत्रिकाओं में छपे ढेर सारे लेखों और आलेखों के अलावा बहुत सारी पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।<sup>1</sup> एक उलझन-भरी समस्या इमारतों के नामकरण की है और विभिन्न लेखकों ने एक ही इमारत के लिए अलग-अलग नामों का इस्तेमाल किया है। फिर समस्या आती है लोगों में प्रचलित क्रिस्सों की जो पिछली सदी में किसी समय प्रचलित हुए और जिनको पुरातत्वशास्त्रियों और इतिहासकारों ने स्वीकार कर लिया है। एक हालिया रचना ने इन भवनों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में बाँटा है : वे जिनका ज़िक्र फ़ारसी स्रोतों में मिलता है और वे जिनका नहीं मिलता।<sup>2</sup> नगर से जुड़ा एक और विवाद और भी हाल का है : क्या फ़तेहपुर एक योजनाबद्ध नगर है जैसा कि अकबर के पोते का बसाया हुआ शाहजहानाबाद है, या इसका क्रमिक विकास हुआ है ? ए पेत्रूक्शियोली हमें पहले दृष्टिकोण का क्रायल करने की कोशिश करते हैं,<sup>3</sup> हालाँकि स्रोतों के अध्ययन से हम इसके विपरीत निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। 1970 की दहाई में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पुरातत्वशास्त्रियों की एक मिली-जुली टीम ने महल-परिसर के आसपास अनेक स्थानों की खुदाई की। इनका संबंध 'कुलीनों के महलों आदि, बाज़ार अस्तबलों, हरम वगैरह' से था। इसकी एक विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित होनी अभी बाक़ी है।<sup>4</sup>

प्रस्तुत आलेख कुछ ऐसे ढाँचों की पहचान का एक प्रयास है जिन पर अभी तक विद्वानों की निगाह नहीं पड़ी, बावजूद इसके कि हो सकता है, तत्कालीन वृत्तांत-लेखकों ने कुछ तथाकथित ग़ैर-पहचानशुदा ढाँचों का ज़िक्र किया हो। आलेख में फ़तेहपुर सीकरी के एक सर्वेक्षण के परिणामों का सार-संक्षेप भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। वह सर्वेक्षण मैंने पहले-पहल मई 1989 में और फिर बाद में जुलाई 1997 के पहले सप्ताह तक विभिन्न अवसरों पर किया था।<sup>5</sup>

फ़तेहपुर सीकरी का सबसे विस्तृत तत्कालीन वर्णन फ़ादर मोंसेरेट ने किया है जो फ़ादर एक्वाविवा और फ़ादर हेनरीक्स के साथ 1580 में दरबार में आए थे। लिखते हैं :

दूसरे हिंदोस्तानी राजाओं के महलों के विपरीत ये शानदार हैं; क्योंकि एक हिंदोस्तानी महल आमतौर पर मंदिर जैसा नीचा और गरिमारहित होता है। उनका पूरा घेरा इतना बड़ा है कि उसमें आसानी से चार बड़े-बड़े शाही महल आ जाते हैं जिनमें सबसे बड़ा और सबसे सुंदर तो बादशाह का अपना महल है। दूसरा महल रानियों और तीसरा शाहज़ादों का है, जबकि चौथे का इस्तेमाल भंडारघर और हथियारखाने के रूप में किया जाता है।<sup>6</sup>



‘बादशाह का अपना महल’ दो भागों—दौलतख़ाना और दीवानख़ान-ए-आम—में विभाजित था। बदायूनी दूसरे भाग को दौलतख़ाना-ए-आम कहकर हमें जानकारी देते हैं कि इसमें ‘114 ऐवान’ (ओसारे) आते हैं।<sup>7</sup> इस इमारत में जहाँ बादशाह अवाम की बातें सुनता था, चार दरवाज़े हैं जबकि बादशाह के अपने दाख़िल होने का रास्ता अलग से है, और इन सब पर एक-एक पहरदार रहता था। मोंसेरेट को सुनिए :

महल के एक दरवाज़े पर तरह-तरह की जंजीरें, हथकड़ियाँ, बेड़ियाँ और दूसरी हथकड़ियाँ वगैरह लटकी हुई हैं, और उपरोक्त मुख्य जल्लाद इस दरवाज़े की निगरानी करता है। बाक़ी तीन दरवाज़ों पर क्रमशः मुख्य द्वारपाल, अखाड़ाबाजों के मुख्य प्रशिक्षक और मुख्य हरकारे का पहरा होता है।<sup>8</sup>

यह माना जा सकता है कि मुख्य द्वारपाल उस दरवाज़े पर खड़ा रहता होगा जो कमल स्तंभवाले हाल के सामने दौलतख़ाना-ए-ख़ास में खुलता है। मुख्य हरकारा उस दरवाज़े के पास खड़ा रहता होगा जो इमारत को चहारसुक्र बाज़ार से होते हुए आगरा दरवाज़े तक आनेवाली सड़क से जोड़ता है; शहर से बाहर जाने का यही सबसे छोटा रास्ता था। हौज़े-शीरी की तरफ़ खुलनेवाला दरवाज़ा, लगता है, वह मुख्य दरवाज़ा रहा होगा जिससे कुलीनों और उनके लाव-लश्कर को दाख़िला दिया जाता होगा। उनके दिलों में आक्रांति और भय का भाव पैदा करने के लिए मुख्य जल्लाद ग़ालिबन यहीं खड़ा होता होगा। अखाड़ाबाजों का मुख्य प्रशिक्षक दक्षिण की ओर खुलनेवाले दरवाज़े पर पहरा देता था। एक चित्र में इसी दरवाज़े से बाज़ीगरों और उनके जानवरों को दाख़िल होते दिखाया गया है।<sup>9</sup>

लगता है दौलतख़ाना-ए-ख़ास दो भागों में बँटा था—दौलतख़ाना और दौलतख़ाना-ए-अनूपतलाव में।<sup>10</sup> इस क्षेत्र में प्रवेश का अधिकार थोड़े-से लोगों तक सीमित था और वे भी आते थे जिनको बादशाह खुद बुलवाता था। दौलतख़ाना-ए-अनूपतलाव का यही क्षेत्र है जिसमें ख़िलवतकद-ए-ख़ास (शाही कमरे) और अकबर की ख़्वाबगाह (शयनकक्ष) थी। इस क्षेत्र का नाम यहाँ बने एक हौज़ अनूपतलाव के नाम पर पड़ा है। लेकिन फ़ादर मोंसेरेट और जहाँगीर ने तालाब का नाम कपूरतलाव लिखा है।<sup>11</sup> बदायूनी ने एक और इमारत का ज़िक्र किया है जिसे वे हुज़र-ए-अनूपतलाव (अनूपतलाव का कक्ष) कहते हैं; यहाँ बादशाह कभी-कभी धर्म-चर्चाओं का आयोजन करता था।<sup>12</sup> प्राविंशियल फ़ादर र्यू विंसेंट के नाम अपने एक पत्र में फ़ादर मोंसेरेट ने इस जगह का और भी खुलकर वर्णन किया है। लिखते हैं :

सनीचर (के रोज़), जो ख़ुदा से जुड़ी बातों की चर्चा के लिए तय किया गया है, हम तीनों (फ़ादर एक्वाविवा, हेनरीक और मोंसेरेट) ‘दरिगितियाना’ (दौलतख़ाना) महल में गए, और जब वक़्त हुआ तो बादशाह के पास जो सबसे पढ़े-लिखे छः मुल्ला थे, उनको उसने हमें लाने के लिए भेजा और हम एक बरामदे तक गए जहाँ दूसरे वक़्तों में वह बोला करता है...<sup>13</sup>

...वह (अकबर) विनम्रता के साथ सबकुछ सुन रहा था, क्योंकि उससे कोई बात चूकती न थी और जो कुछ पढ़ा जा रहा था, उसे बेहतर समझने के लिए वह कुछ पूछ लेता था, और सर हिलाता था, और यह जतलाता था कि वह सो रहा है, और दूसरी तरफ़ वह अपनी बेहद चमकदार आँखें कमरे में दौड़ाकर एक बहुत ही समझदार और होशियार शख्स की अदा से मौजूद लोगों का जायज़ा लेता था।<sup>14</sup>



इस साक्ष्य से स्पष्ट संकेत मिलता है कि तथाकथित 'तुर्क सुल्तान का हुजरा' और उसके चारों तरफ़ का छत्तेदार बरामदा वही इमारतें हैं जिनके लिए बदायूनी ने हुजर-ए-अनूपतलाव का नाम इस्तेमाल किया है। इस बरामदे का इस्तेमाल उन लोगों को बिठाने के लिए किया जाता था जिनको बादशाह मिलने के लिए बुलाता था।<sup>15</sup> इसके अलावा यह दौलतखान-ए-अनूपतलाव के क्षेत्र को दौलतखान-ए-खास से अलग भी करता था। हुजर-ए-अनूपतलाव के पश्चिम में और उससे छत्तेदार दोहरे गलियारे के जरिए जुड़ा हुआ एक और ढाँचा है जिसे कभी-कभी ग़लती से एक 'बालिका विद्यालय' कह दिया जाता है।<sup>16</sup> अतहर अब्बास रिज्वी जब उसे 'आबदारखाना और फल-भंडार' कहते हैं जहाँ बादशाह के लिए फल और पेय जमा करके रखे जाते थे, तो लगता है उनकी बात सही है।<sup>17</sup> खिलवतकद-ए-खास और ख्वाबगाह भी इसी क्षेत्र में स्थित हैं।<sup>18</sup>

खिलवतकद-ए-खास और ख्वाबगाह वाली इमारत के पूरब में दो कमरे हैं जिनके परंपरा में विभिन्न उद्देश्य बताए गए हैं। जो कमरा पीछे की ओर है और जिसके साथ एक चबूतरा जुड़ा हुआ है, उसकी पहचान अतहर अब्बास रिज्वी ने दीवाने-खास के रूप में की है।<sup>19</sup> सामने के कमरे को अलग-अलग लोगों ने 'भंडारा' (पैंट्री) या 'पुस्तकालय' कहा है। रिज्वी लिखते हैं कि इसका इस्तेमाल अकबर के निजी पुस्तकालय के रूप में, सम्मानित अतिथियों से अनौपचारिक गप-शप के लिए और भोजनकक्ष के रूप में किया जाता था।<sup>20</sup> कहा गया है कि यहाँ एक खज़ाना-ए-अनूपतलाव यानी अनूपतलाव का खज़ाना भी था।<sup>21</sup> शायद यही इमारत बेहतर ढंग से इस मक़सद को पूरा करती होगी। सरकनेवाले तख़्तों के साथवाली खोखली दीवारें दूसरी किसी इमारत के मुकाबले इस उद्देश्य के लिए ज़्यादा माक़ूल होंगी।

आबदारखाना से परे दौलतखान-ए-खास का दालान है जहाँ सुप्रसिद्ध पंचमहल, तथाकथित 'संज्ञा-चाँदी का खज़ाना' (आँख मिचौली) और 'जवाहरखाना' (कमल-स्तंभ वाला कमरा) स्थित हैं। आमतौर पर माना जाता है कि तत्कालीन फ़ारसी स्रोत इनके बारे में पूरी तरह ख़ामोश हैं। पर आरिफ़ कंधारी का विवरण पढ़ें तो यह विवाद सुलझ जाता है। दौलतखाने के दालान का वर्णन करते हुए कंधारी लिखते हैं :

आसमान जैसी छतवाली उस इमारत के सेह्न (दालान) के एक तरफ़ एक चहारखाना चहारसुफ़्फ़ा और एक ऐवानखाना बना रखा है जो सभी लाल बलुआ पत्थर से तराशे गए हैं। उनके अबवाब (दरवाज़े) और शिबाक (झरोखे) इस तरह तैयार किए गए हैं कि आठ दरवाज़ों वाली जन्नत का रखवाला भी उनसे बराबरी का दावा नहीं कर सकता...<sup>22</sup>

चहारखाना एक वर्गाकार कमरा है जिसमें चारों तरफ़ दरवाज़े हैं। यह कमल-स्तंभ वाले कक्ष का स्पष्ट हवाला है, जो दालान के उत्तरी तरफ़ स्थित है और एक पूर्ण वर्ग के रूप में है। दालान के उत्तर-पश्चिम में पंचमहल है जो एक चार मंज़िला इमारत है और जिसके ऊपर एक छोटा-सा गुंबद बना है; चहारसुफ़्फ़ा का मतलब ही चार चबूतरों या फ़र्शों वाली इमारत है। इन दो इमारतों के बीच तथाकथित खज़ाना है जिसमें तीन बड़े ऐवान (ओसारे) आते हैं; शब्द ऐवानखाना का प्रयोग इसी कारण किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि इन तीनों ऐवानों में कभी जालीदार झरोखे (शिबाक) हुआ करते थे।

बदायूनी कहते हैं कि 985 हि/1577 ई में अकबर ने एक वर्गाकार हौज़ बनवाने का हुक्म जारी किया था जिसका हर किनारा बीस गज़ का हो और गहराई तीन गज़ हो। इसके बीच में एक हुजरा (कमरा) बनवाया गया जिसके ऊपर एक मीनार-ए-बुलंद (ऊँची मीनार) बनी थी।



कमरे के चारों तरफ़ पुल बने हुए थे।<sup>23</sup> अबुल-फ़ज़ल भी यही लंबाई-चौड़ाई बतलाते हैं।<sup>24</sup> बदायूनी कहते हैं कि यह हौज़ जो 1577 में बनवाया गया, 'बीस करोड़ क्रीमत के ज़रे-सियाह (ताँबे के सिक्कों) से भरा गया।' कंधारी कहते हैं कि 'उस सेह्न (दालान) में बना' तालाब 986 हि/1578-79 ई में खाली करा लिया गया और 'ताँबे, चाँदी और सोने के तंकों' से भर दिया गया।<sup>25</sup> अबुल-फ़ज़ल ने उसी साल के मुतल्लिक़ यही जानकारी दी है।<sup>26</sup>

दूसरी तरफ़ जहाँगीर ने दालान के बीच एक तालाब का ज़िक्र किया है जिसे वह 'कपूरतलाव' कहता है और उसका माप 36 वर्ग गज़ मय 4.5 गज़ गहराई बतलाता है। इसे भी ताँबे के सिक्कों से लबालब भरा गया था।<sup>27</sup>

सवाल यह है कि अबुल-फ़ज़ल ने अनूपतलाव की जो लंबाई-चौड़ाई बताई है, उस पर भरोसा करें तो क्या यही तालाब हौज़े-अनूपतलाव था। अनूपतलाव की तरह इस हौज़ में भी पुल थे। पर फिर बदायूनी तो अनूपतलाव के निर्माण का जो साल 1576-76 (983 हि)<sup>28</sup> लिखते हैं, यानी इस दूसरे तालाब के निर्माण का साल वे बतलाते हैं उससे दो साल पहले। दूसरी बात, कहा गया है कि बाद वाले तालाब के ऊपर एक ऊँची मीनार थी जो बदनसीबी से आज गायब है। इस तालाब के वजूद पर बदायूनी के बयान की ताईद अकबरनामा के दो चित्रों से होती है, और दोनों में ही दीवाने-आम के पीछे कहीं एक मीनार दिखाई गई है।<sup>29</sup> इसलिए हम इत्मीनान से कह सकते हैं कि किसी वक़्त दौलतख़ाना में दो तालाब थे—एक तो अनूपतलाव और एक दूसरा। तो क्या यह दूसरा तालाब वही है जिसे जहाँगीर ने 'कपूरतलाव' लिखा है?

मोंसेरेट ने अकबर के जिस 'पहले महल' का ज़िक्र किया है, उससे जुड़ी एक और समस्या बादशाह के भोजनकक्ष की है। अगर यह ख़िलवतक़दा और दौलतख़ाना के पास नहीं था तो फिर कहाँ था? इस समस्या का एक उत्तर खुद मोंसेरेट ने दिया है। निजी भोजनकक्ष का वर्णन करते हुए फ़ादर मोंसेरेट लिखते हैं :

उसके भोजनकक्ष में ईसा, मरियम, मूसा और मुहम्मद की तस्वीरें लगी हैं; उनका नाम लेते समय मुहम्मद को आख़िर में रखकर उसने अपने सच्चे जज़्बात ज़ाहिर किए; क्योंकि वह कहने लगा, 'यह ईसा की तस्वीर है, यह मरियम की, यह मूसा की और वह मुहम्मद की...'<sup>30</sup>

आगे वे कहते हैं :

उसका दस्तरख़्वान बेहद लंबा-चौड़ा है, जिसमें आमतौर से बड़ी-बड़ी थालियों में परोसे गए 40 से अधिक व्यंजन होते हैं। इनको भलमली कपड़ों से ढककर और लपेटकर शाही भोजनकक्ष में लाया जाता है...उनको भोजनकक्ष के दरवाज़े तक नौजवान लड़के लेकर आते हैं, दूसरे मुलाज़िम उनके आगे-आगे चलते हैं और बावर्चियों का मुखिया पीछे चलता है। यहाँ उनको हिजड़े ले लेते हैं जो उन्हें शाही दस्तरख़्वान पर भोजन परोसनेवाली कनीज़ों के हवाले कर देते हैं। वह एक आम भोज के मौक़ों को छोड़ दें तो अकेले में भोजन करने का आदी है...<sup>31</sup>

दूसरा सवाल भोजनकक्ष की स्थिति को लेकर है जो ऐसी जगह रहा होगा जहाँ मर्दों को जाने की इजाज़त नहीं रही होगी। दौलतख़ाना-ए-अनूपतलाव के छत्तों से पश्चिम में और उस आबदारख़ाना से बहुत दूर नहीं जहाँ माना जाता है कि भोजन परोसा जाता होगा, एक निजी



दरवाजा है। यह उस भाग की ओर खुलता है जो, आज लगता है, हरमसरा या रनिवास रहा होगा। यह दरवाजा व्यक्ति को दौलतखाना से उस इमारत की ओर ले जाता है जिसे लोग 'सुनहरा मकान' या 'मरियम का मकान' कहते हैं। यह इमारत भी शुरू में हरमसरा के दफ्तरों की तरफ़ और मुख्य हरमसरा ('जोधाबाई महल') की तरफ़ दीवारें खड़ी करके बाकी हरमसरों से अलग कर दी गई थी। एक और दीवार इस इमारत को हरमसरा के बाग़ से अलग करती थी। दूसरे शब्दों में, 'मरियम का मकान' दौलतखाना से बाहर होते हुए भी हरमसरा का हिस्सा न था। इस इमारत में दोनों महलों के निवासी ब-आसानी आ-जा सकते थे। इसके केंद्रीय कक्ष में ताक़ें बनी हुई हैं जिनमें तस्वीरों के कुछ निशान आज भी देखे जा सकते हैं। केंद्रीय कक्ष की एक (दक्षिण-पूर्व की) ताक़ में यूरोपीय फ़ैशन की एक औरत की तस्वीर बनी हुई है।<sup>32</sup> इस इमारत की पूर्वी और पश्चिमी दीवारों पर पंखवाली हस्तियों की तस्वीरें हैं जिनको स्मिथ ने फ़रिश्ते समझा था।<sup>33</sup> यह इमारत भित्तिचित्रों से भरी हुई है जिनमें दरबार के दृश्य, हाथियों की लड़ाइयाँ, और फूलों की अल्पनाएँ दिखाई देती हैं। ऐन मुमकिन है कि ये चित्र *हम्ज़ानामा* या ऐसी ही किसी दूसरी रचना से लिए गए हों।<sup>34</sup>

हो संकता है, इन चित्रों ने स्मिथ की तरह मोंसेरेट को भी गुमराह किया हो कि इनमें ईसाइयत के विषय दिखाए गए हैं। यह भी मुमकिन है कि ताक़वाली महिला को मरियम माना गया हो।

अगर यह किसी महिला का निवास रहा होगा जो चाहे जितने ऊँचे रुतबेवाली रही हो, शिकार, लड़ाई और घेराबंदी के अनेकों दृश्यों का वहाँ कोई मतलब नहीं था। इससे लगता है कि यही इमारत अकबर का वह 'भोजनकक्ष' रही होगी जिसका मोंसेरेट ने वर्णन किया है।

उसकी बाईं तरफ़, दक्षिण-पूर्व दिशा में ढेर सारी नक्काशी वाली एक इमारत (रिज्वी का 'हरमसरा का दफ़्तर') है जिसकी छत मूल रूप से ढलवाँ थी। हुजर-ए-अनूपतलाव से बहुत-कुछ मिलते-जुलते ढाँचोंवाली यह इमारत शायद शाही मुंशियों का दफ़्तर रही होगी जो अकबर के हुजूर में खड़े रहते होंगे। मोंसेरेट के विवरण के आधार पर इसे ही हम 'भोजन कक्ष' कह सकते हैं।

स्रोतों में एक और इमारत का ज़िक्र मिलता है पर अभी तक उसकी सही पहचान नहीं हो सकी है। यह है शाहज़ादों का मदरसा। मोंसेरेट ने यह बात बिलकुल साफ़ कर दी है कि यह 'मदरसा' महल के अंदर ही था :

जुमा (शुक्रवार) की सुबह को मैं महल में गया और वहाँ पहुँचा तो बादशाह वहाँ दाख़िल हो रहा था जहाँ हम पढ़ाते हैं, और जब हमने उसकी बंदगी की तो उसने इशारा किया कि मैं अंदर आ जाऊँ...<sup>35</sup>

तथाकथित 'हरमसरा मेहमानख़ाने' पर हम और गहरी निगाह डालें तो पता चलता है कि वह उस इमारत के पास जिसे हमने ऐवानख़ाना कहा है, एक गलियारे के ज़रिए दौलतख़ाना से जुड़ा हुआ है। यह हरमसरा से निश्चित रूप से एक बड़े दरवाज़े की मदद से अलग किया हुआ है जो हरमसरा के बाग़ों की तरफ़ खुलता है। इस तथाकथित 'मेहमानख़ाने' का केंद्रीय कक्ष भी इसके लिए बिलकुल उपयुक्त है कि वहाँ कोई शाहज़ादा मुख्य महल और हरमसरा, दोनों के वासियों की नज़रों में रहकर अध्ययन करे। क्या यही उन नौजवान शाहज़ादों का मदरसा या मक़तब था जिनको जेसुइट पादरी पढ़ाते थे ?

किसी समय ढकी हुई जालियों और खंभोंवाला एक गलियारा ख़्वाबगाह को दौलतख़ाना के पश्चिम में स्थित उस लंबी-चौड़ी और मज़बूत बनी दोमंज़िला इमारत से जोड़ता था जिसे लोग



‘जोधाबाई का महल’ कहते हैं। तथाकथित ‘बीरबल महल’, खंभोंवाले और आयताकार दालान जैसी इमारत (रिज्वी का ‘मीनाबाज़ार’), नगीना मस्जिद और ‘जोधाबाई महल’ के उत्तर में स्थित छोटे मगर खूबसूरत बाग़ के साथ यह इमारत ही शायद मोंसेरेट का बताया हुआ ‘दूसरा महल’ रही होगी।

‘जोधाबाई का महल’ जिसमें ड्योढ़ीवाले मात्र एक दरवाज़े से जाया जा सकता था, चौकोर बना है। इसमें चारों तरफ़ परस्पर असंबद्ध कमरे और ऐवान हैं और बीच में एक बड़ा-सा वर्गाकार दालान है। इसकी दोनों मंज़िलों में कुल मिलाकर सात या आठ से अधिक लोग नहीं रह सकते थे। शायद यही ढाँचा मुख्य हरमसरा रहा होगा<sup>36</sup> जहाँ अकबर की पटरानियाँ, जो खुद संभवतः सात या आठ से अधिक न थीं, रहती होंगी।<sup>37</sup> इस ढाँचे की उत्तरी दीवार से जुड़ा हवामहल यूँ तो बाद में जोड़ा गया<sup>38</sup> पर खुद अकबर के दौर में, संभवतः 1575-76 के आसपास जोड़ा गया। इस हवामहल के पीछे से गुज़र रहा एक जालीदार गलियारा मुख्य हरमसरा को हिरनमीनार के पास की सराय से जोड़ता है।

तथाकथित ‘बीरबल महल’ भी हरमसरा परिसर का ही भाग है। इसमें दौलतख़ाना में स्थित हुज़र-ए-अनूपतलाव की तरह ही ढेर सारी नक्काशी दिखाई देती है। इसके दक्षिणी कमरों में से एक की पश्चिमी दीवार पर मौजूद एक कच्ची देवनागरी तहरीर में इसके निर्माण की तिथि 1629 संवत्/1572 ई बताई गई है, अर्थात् शाही महलों के निर्माण का हुक्म जारी किए जाने के कुछ ही बाद।<sup>39</sup> मोंसेरेट ने भी लिखा है कि उन्हीं दिनों अकबर ने ‘जितनी तेज़ी से मुमकिन हो, एक छोटा मगर शाही शान-शौकत वाला देसी मकान बनाने का हुक्म जारी किया’ था और इसे ‘कुछ ही अर्से बाद बढ़ाकर एक महल बना दिया गया’।<sup>40</sup> यह इमारत बिल्कुल शुरू में बननेवाली इमारतों में एक थी, और लगता है कि 1575-76 में ख़्वाबगाह और ख़िलवतगाह के पूरा होने से पहले शाही इस्तेमाल में रही होगी।<sup>41</sup> अकबर जब अपने नए दौलतख़ाने में चला गया तो इस दोमंज़िला इमारत को हरम का हिस्सा बना दिया गया। अगर हम इसके स्वतंत्र चरित्र को एक संकेत मानें तो हो सकता है कि इसे अकबरी दरबार की एक और शाही ख़ातून का निवास बना दिया गया हो; यह ख़ातून थी हुमायूँ की विधवा और बादशाह की माँ मरियम मकानी जिनकी दरबार में बेपनाह इज़्ज़त की जाती थी। दूसरी औरतों और कनीज़ों को ग़ालिबन तथाकथित ‘मीनाबाज़ार’ में रखा जाता था और इसलिए इसे हम छोटा हरमसरा कह सकते हैं। अकबर के हरम की स्त्रियाँ, चाहे वे कितनी ही महत्त्वहीन हों, मुख्य महल के परिसर से बाहर नहीं रखी जा सकती थीं। पर उस ‘तीसरे महल’ का क्या हुआ जहाँ शाहज़ादे रहते थे ? रिज्वी का कहना है कि कर्ज़न के डाक बँगला के सामने तानसेन की तथाकथित बारादरी के पास का क्षेत्र शाहज़ादा सलीम की रिहाइश का क्षेत्र था।<sup>42</sup> पर इस क्षेत्र में बाद की खुदाइयों से सिर्फ़ कुछ ‘कुलीनों की इमारतों’ का पता चला है। शाहज़ादा सलीम के मरतबेवाला कोई शख्स जिस एकमात्र स्थान में रहता होगा वह है तथाकथित ‘हकीम का मकान’ जो है तो शाही रिहाइशगाहों से अलग पर फिर भी उनके सबसे पास और सबसे शानदार है। ख़्वाबगाह, शाही हम्मामों के लिए ज़रूरी पानी की रसद करने वाले जलाशयों और अनूपतलाव के इतने करीबी इलाक़े में किसी कुलीन को रहने की इजाज़त नहीं रही होगी।

शाही हम्मामों (‘हकीम के हम्मामों’) के पास और दीवानख़ान-ए-आम के दक्षिण-पूर्व में चहारदीवारी से नीची सतह पर इमारतों का एक और समूह है जिसमें कमरे, हम्माम और ऐवान हैं। ये इमारतें सोने के रंगों में फूलों की अल्पनाओं और ज्यामितीय आकृतियों से बहुत अधिक सजाई हुई हैं। ये इमारतें भी ‘शाहज़ादों की रिहाइशगाहों’ का हिस्सा लगती हैं।



जहाँ तक कारखानों का ताल्लुक है, वे भी महल के अंदर या उसके बहुत पास हैं। अपने एक पत्र में मोंसेरेट ने लिखा है : 'बादशाह एक मिस्त्री है और महल के घेरे के अंदर उसने हर तरह के कारीगर जमा कर रखे हैं।' <sup>43</sup> आगे लिखते हैं कि अकबर दीवाने-आम के पास में ही स्थित 'बंदूकसाज़ के कारखाने' तक टहला करता था। <sup>44</sup> अपनी कमेंटरीज़ में वे स्पष्ट करते हैं :

...उसने महल के नज़दीक एक कारखाना बनवा रखा है जहाँ तसवीरकदे और अधिक ललित और अधिक इज़्ज़त पानेवाली कलाओं के कारखाने हैं, जैसे चित्रकला, सुनारगीरी, चित्रों के साथ कपड़ासाज़ी, कालीनसाज़ी और परदासाज़ी, और हथियारसाज़ी के कारखाने। <sup>45</sup>

क्रंधारी भी यही बतलाते हैं कि वे कारखाने (बुयुतात/कारखाना-हा) महल परिसर की 'बग़ल में या इर्द-गिर्द' बनवाए गए थे। <sup>46</sup>

लगता है कि दीवानखान-ए-आम के उत्तर-पूर्व में बना विशालकाय, पक्की चिनाईवाला ढाँचा ही वह शाही कारखाना रहा होगा जिसका हवाला क्रंधारी और मोंसेरेट ने दिया है। इस वर्गाकार ढाँचे में एक केंद्रीय दालान है जो चारों तरफ़ छत्तेदार गलियारों से घिरा हुआ है और ये गलियारे दोहरे चबूतरों के रूप में हैं जो छोटे गोल गुंबदों से ढके हुए हैं। उन्नत इतिहास अध्ययन केंद्र, अलीगढ़ द्वारा की गई खुदाइयों से आयताकार तालाबों और पत्थर के कुंडोंवाले चबूतरों का पता चला है जो इस इमारत के दालान में बने हुए हैं। इस इमारत की वास्तुशास्त्रीय विशेषताओं और स्थिति से इस विचार को बल मिलता है कि तथाकथित 'टकसाल' शाही कारखाना थी।

लगता है, हाथीपोल के इर्द-गिर्द शाही कारखाना ('टकसाल') के जिस क्षेत्र का जिक्र किया गया है वह यतशख़ानों अर्थात् विभिन्न अफ़सरों के दफ़्तर-मय-रिहाइश के लिए दे दिया गया था। दीवाने-आम की उत्तरी दीवार से लगा हुआ बावर्चीख़ाना है जिसके साथ बावर्चीख़ाने के अफ़सर मुहम्मद बाक़र का यतशख़ाना था। उससे आगे, हौज़े-शीरीं से नीचे जानवरों के अफ़सर का मकान है। यह यतशख़ाना चीताख़ाना, फ़ीलख़ाना वगैरह से लगा हुआ है जिनका पता अभी हाल की खुदाई से चला है। अफ़सरों के दफ़्तरों और मकानों का यह सिलसिला हाथीपोल से आगे तक चला जाता है जिसके पीछे परिसर के घेरे की सीमा पर एक मकान है। यह मकान हिरनमीनार के पास स्थित तथाकथित फ़र्राशख़ाना या सराय से सीढ़ियों के ज़रिए सीधा जुड़ा हुआ है। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से इस 'सराय' की इमारत अकबर की दूसरी इमारतों जैसी ही लगती है। क्रंधारी जब फ़तेहपुर सीकरी में अकबर द्वारा सरायों के निर्माण की बात करते हैं तो बहुवचन (सरा-हा) का प्रयोग करते हैं। <sup>47</sup> वारिस हमें बतलाते हैं कि 1064 हि/1655 ई में शाहजहाँ ने झील में झाँकते हुए एक महल (दौलतख़ाना) की तामीर का हुक्म जारी किया था। <sup>48</sup>

ऊपर उद्धृत अध्यक्षीय भाषण <sup>49</sup> में आर सी गौड़ ने एक विशाल इमारत का जिक्र किया है जो 'समोसा महल', चिश्ती की दरगाह, जामी मस्जिद और हिरनमीनार की 'सराय' के अफ़सर के मकान के बीच स्थित थी। इसकी पहचान वे 'छोटा हरमसरा' के रूप में करते हैं। इसकी मात्र स्थिति ही इसकी संभावना नहीं रहने देती कि यह बादशाह के परिवार की किसी ख़ातून की रिहाइश रही होगी क्योंकि उन ख़ातूनों को कभी दफ़्तरी इलाक़े में रहने की इजाज़त नहीं दी जाती। फिर भी यह इमारत इतनी विशाल है कि इसकी पहचान किसी कुलीन के महल के रूप में भी नहीं की जा सकती। इसमें बहुत सारे कमरों के अलावा दो हम्माम हैं, एक चहारबाग़ है, एक भूमिगत जलाशय है और एक खुला तालाब है। इस इमारत और इसके हम्मामों की दीवारों



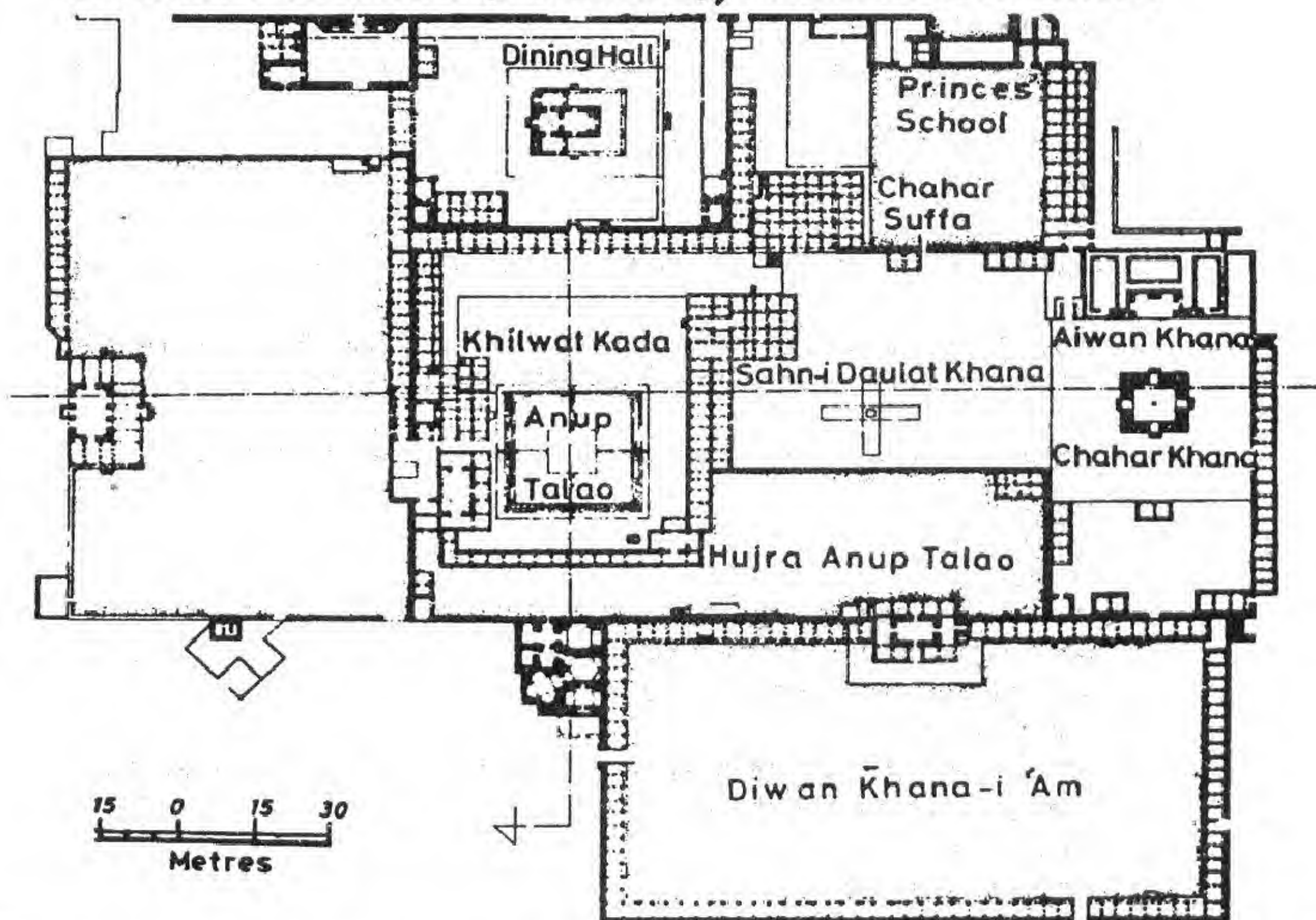
पर चमकदार मैरून रंग में बहुत सारी फूलों की अल्पनाएँ बनी हैं। गौड़ की बताई हुई योजना इमारत में किसी प्रवेशद्वार की जानकारी नहीं देती पर और भी ध्यान से देखने पर एक विशाल दरवाज़ा नज़र आया जो बाद के किसी मरम्मत-कार्य के दौरान एक कमरे में बदल दिया गया। यह दरवाज़ा हाथीपोल से चिश्ती की दरगाह और रंगमहल जानेवाले रास्ते पर खुलता था।

इसके उत्तर में स्थित झील को देखकर साँस थम-सी जाती है। इस तरह लगता है कि यह शानदार इमारत छोटा हरमसरा न होकर शाहजहाँ का बनवाया वह महल रही होगी जो तब बनवाया गया जब अकबर के महलों और दफ्तरों वगैरह का इस्तेमाल बंद हो चुका था।<sup>50</sup>

यूँ तो फ़तेहपुर सीकरी के बारे में बहुत-कुछ लिखा गया है, पर फिर भी वह नगर अकबर के दौर के बारे में जानकारियों का एक कभी ख़त्म न होनेवाला खज़ाना मालूम होता है। हिरनमीनार से लेकर अजमेर दरवाज़ा तक की दुकानें, इंदरावली का इलाक़ा और उसके चबूतरे, इमारतें, कुएँ, तालाब और बावलियाँ, बीरपोल के इर्द-गिर्द का इलाक़ा, ग्वालियर दरवाज़ा, और घेरे पर बनी इमारतें—उस महान प्रतिभाशाली व्यक्ति द्वारा बसाए गए इस नगर के रहस्यों पर से परदा उठाने के लिए इन सबका विस्तृत अध्ययन आवश्यक है।

### PLAN

#### DAULAT KHANA (PALACE), FATEHPUR SIKRI



Plan based on Petruccioli

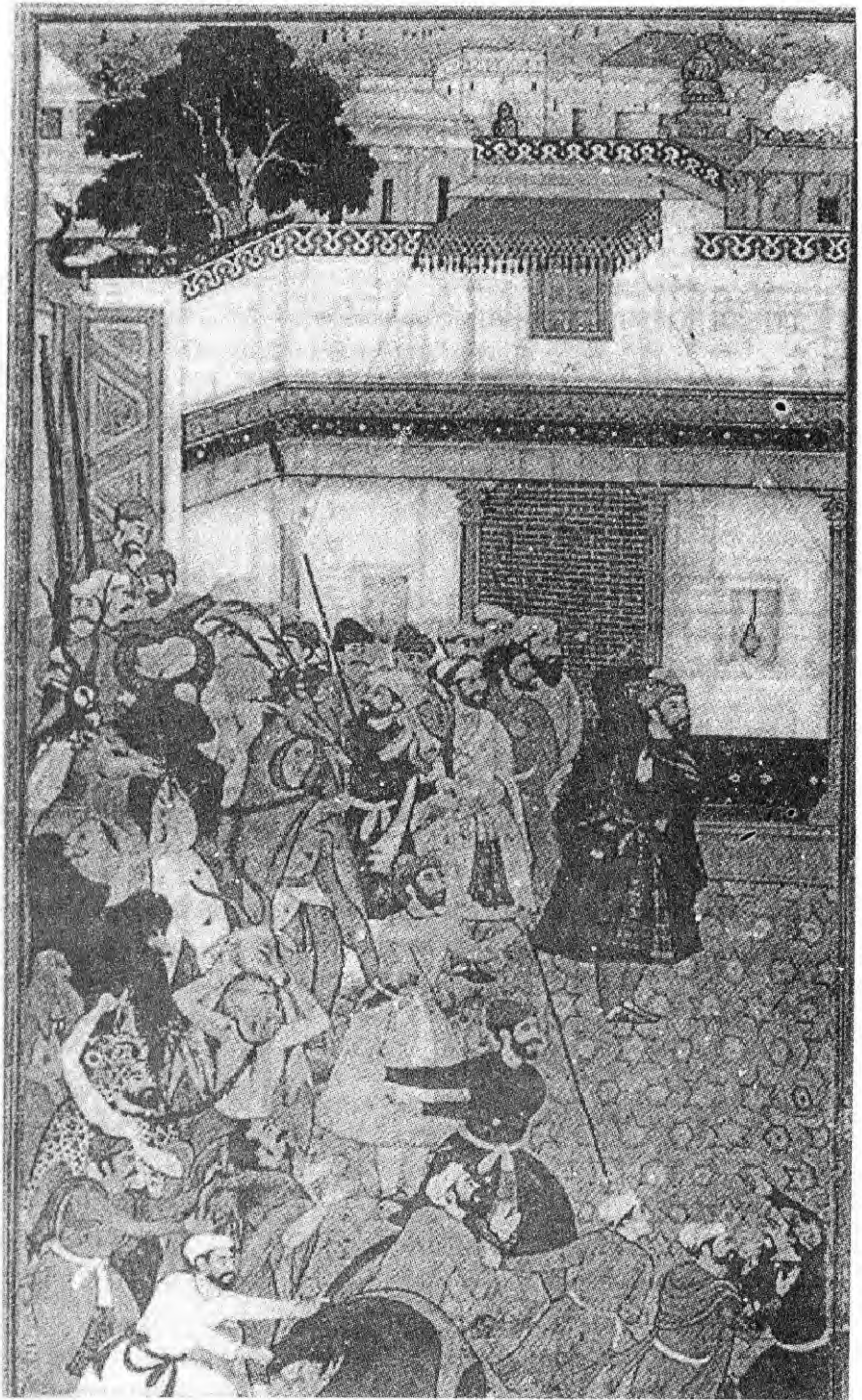
## संदर्भ और टिप्पणियाँ

1. मसलन एस के बनर्जी, बुलंद दरवाज़ा ऑफ़ फ़तेहपुर सीकरी, लंदन हिस्टारिकल क्वार्टरली, तेरह, 1937; उन्हीं की ए हिस्टारिकल आउटलाइन ऑफ़ अकबर्स दारुल-ख़िलाफ़त, फ़तेहपुर सीकरी, जर्नल ऑफ़ इंडियन हिस्टरी जे आई एच, इक्कीस, 1942; फ़ादर हेरस, द पैलेस ऑफ़ अकबर ऐट फ़तेहपुर सीकरी, जे आई एच, 1925; अशरफ़ हुसैन, ए गाइड टू फ़तेहपुर सीकरी, दिल्ली, 1947; ए बी एम हुसैन, फ़तेहपुर सीकरी एंड इट्स आर्किटेक्चर, ढाका, 1970; मुहम्मद सईद मारहरवी, तारीख़े-फ़तेहपुर (उर्दू), 1905; एस ए ए रिज्जी, फ़तेहपुर सीकरी, नई दिल्ली, 1972; एस ए ए रिज्जी और वी जे ए फ़िलन, फ़तेहपुर सीकरी, मुंबई, 1975; माइकेल ब्रांड और ग्लेन डी लावरी (सं), फ़तेहपुर सीकरी : ए सोर्स बुक, मैसाचुसेट्स, 1985; उन्हीं की अकबर्स इंडिया : आर्ट फ़्रॉम द मुग़ल सिटी ऑफ़ विक्टरी, मैसाचुसेट्स, 1985 देखें।
2. माइकेल ब्रांड और ग्लेन डी लावरी (सं), पूर्वोक्त।
3. एतिलियो पेन्नूक्शियौली, ला सिता देल सोल एंड देले एक्वे फ़तेहपुर सीकरी, रोम, 1988
4. अलीगढ़ की टीम ने प्रोफ़ेसर आर सी गौड़ के निर्देशन में काम किया जिन्होंने आगे चलकर इंडियन आर्कियोलोज़िकल सोसाइटी में अपने अध्यक्षीय भाषण में एक प्रारंभिक रिपोर्ट 'द आर्कियोलोजी ऑफ़ अर्बन मुग़ल इंडिया : एक्सकेवेशंस ऐट फ़तेहपुर सीकरी' (शांतिनिकेतन, दिसंबर 1988) प्रस्तुत की।
5. आलेख के अंत में दिया गया चित्र देखें जिसमें महल परिसर की जिन इमारतों की पहचान यहाँ की गई है, उनको दिखाया गया है। लेखक इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के पुरातत्व अनुभाग के श्री ज़मीर अहमद, श्री अनीस अलवी, श्री गुलाम मुज्ताबा और श्री हुसैन हैदर का तथा अपने सहकर्मियों स्वर्गीय श्री राजीव शर्मा और डा. जाबिर रज़ा का आभारी है जिन्होंने विभिन्न अवसरों पर उसके साथ सीकरी की यात्राएँ कीं।
6. फ़ादर एंथनी मोंसेरेट, द कमेंटरी ऑफ़ फ़ादर मोंसेरेट, एस जे, अनु : जे एस हायलैंड, लंदन, 1922, पृ. 199
7. बदायूनी, मुंतख़बुत-तवारीख़, सं: एम ए अलवी, कलकत्ता, दो, 1869, पृ. 365
8. मोंसेरेट, पृ. 211
9. प्लेट एक देखें।
10. बदायूनी, दो, पृ. 215; एक और जगह (उपरोक्त, दो, पृ. 201) बदायूनी ने इसे 'अनूपतलाव की इमारत' कहा है।
11. मोंसेरेट, पृ. 28; तुजुक-जहाँगीरी, गाज़ीपुर व अलीगढ़, 1863-64, पृ. 260; बदायूनी की तरह कंधारी (तारीख़े-अकबरी, रामपुर, 1962, पृ. 151) भी अनूपतलाव का ज़िक्र करते हैं।
12. बदायूनी, दो, पृ. 208
13. लेटर्स फ़्रॉम द मुग़ल कोर्ट : द फ़र्स्ट जेसुइट मिशन टु अकबर (1580-1583), सं : जान कोरिया-अलफ़्रांसो, मुंबई, 1980, पृ. 72
14. उपरोक्त, पृ. 74
15. उपरोक्त, पृ. 83
16. एस के बनर्जी, अकबर्स दारुल-ख़िलाफ़त, जे आई एच, पूर्वोक्त, पृ. 211
17. एस ए ए रिज्जी और वी जे ए फ़िलन, पूर्वोक्त, पृ. 35
18. इसकी तफ़सील के लिए उपरोक्त, पृ. 28-29 देखें।
19. रिज्जी, पूर्वोक्त, पृ. 26
20. उपरोक्त, पृ. 26 देखें। फ़ादर हेरस, पूर्वोक्त, ने पृ. 61-62 पर इसे ग़लत तौर पर भोजनकक्ष कहा है।
21. अबुल-फ़ज्ज, अकबरनामा, कलकत्ता, 1887, तीन, पृ. 246
22. कंधारी, पृ. 151
23. बदायूनी, दो, पृ. 264-65
24. अबुल-फ़ज्ज, अकबरनामा, तीन, पूर्वोक्त, पृ. 141-42
25. कंधारी, पृ. 152
26. अकबरनामा, तीन, पृ. 246
27. तुजुक, पृ. 260



28. बदायूनी, दो, पृ. 200-201
29. प्लेट एक व दो देखें।
30. मोंसेरेट, पृ. 29
31. उपरोक्त, पृ. 199
32. प्लेट तीन देखें।
33. प्लेट चार और पाँच देखें।
34. विस्तृत वर्णन के लिए एस ए ए रिज्जी, पूर्वोक्त, पृ. 53-55 देखें।
35. जेसुइट लेटर्स, पृ. 85
36. रिज्जी, पूर्वोक्त, पृ. 46-49 भी देखें।
37. अकबर की पत्नियों की ठीक-ठीक संख्या ज्ञात नहीं है। पर हमें यह ज्ञात है कि फ़तेहपुर सीकरी के इबादतख़ाना में धर्मचर्चा के दौरान शैख अब्दुन्नबी ने एक बार राय दी थी (बदायूनी, दो, पृ. 207-8) कि वह क़ानूनी तौर पर नौ बीवियाँ रख सकता है। मुमकिन है शैख ने उसी संख्या की सिफ़ारिश की हो जो अकबर के पास पहले से थी। इनमें से सिर्फ़ तीन, अर्थात्, रुक़य्या सुल्तान बेगम (बिते मिर्ज़ा हिंडाल), सलीमा सुल्तान बेगम (बेवा बैरम ख़ान) और मरियम ज़मानी (वालिदा शाहज़ादा सलीम) ही उसकी पटरानियाँ मालूम होती हैं।
38. पेन्वूक्शियोली, द ज्योमेट्री ऑफ़ पावर : द सिटीज़ प्लानिंग, एम ब्रांड और ग्लेन डी लोवरी (सं), फ़तेहपुर सीकरी, मार्ग प्रकाशन, 1987 में संकलित, पृ. 56
39. अकबरनामा, दो, पृ. 365; क़ंधारी, पृ. 149-51
40. मोंसेरेट, पृ. 33
41. बदायूनी, दो, पृ. 201
42. रिज्जी, पूर्वोक्त, पृ. 24
43. जेसुइट लेटर्स, पृ. 37; पृ. 81 भी
44. उपरोक्त, पृ. 35-36
45. मोंसेरेट, पृ. 201
46. क़ंधारी, पृ. 151
47. क़ंधारी, पृ. 150
48. वारिस, बादशाहनामा, पांडुलिपि रामपुर की प्रति, इतिहास विभाग, अ. मु. विश्वविद्यालय में सुरक्षित, दो, पृ. 244, 284
49. आर सी गौड़, पूर्वोक्त
50. मेरा अनुलेखित आलेख 'पोस्ट-अकबर फ़तेहपुर सीकरी' देखें जो उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के आठवें सत्र (वाराणसी; फ़रवरी 1994) में प्रस्तुत किया गया था।







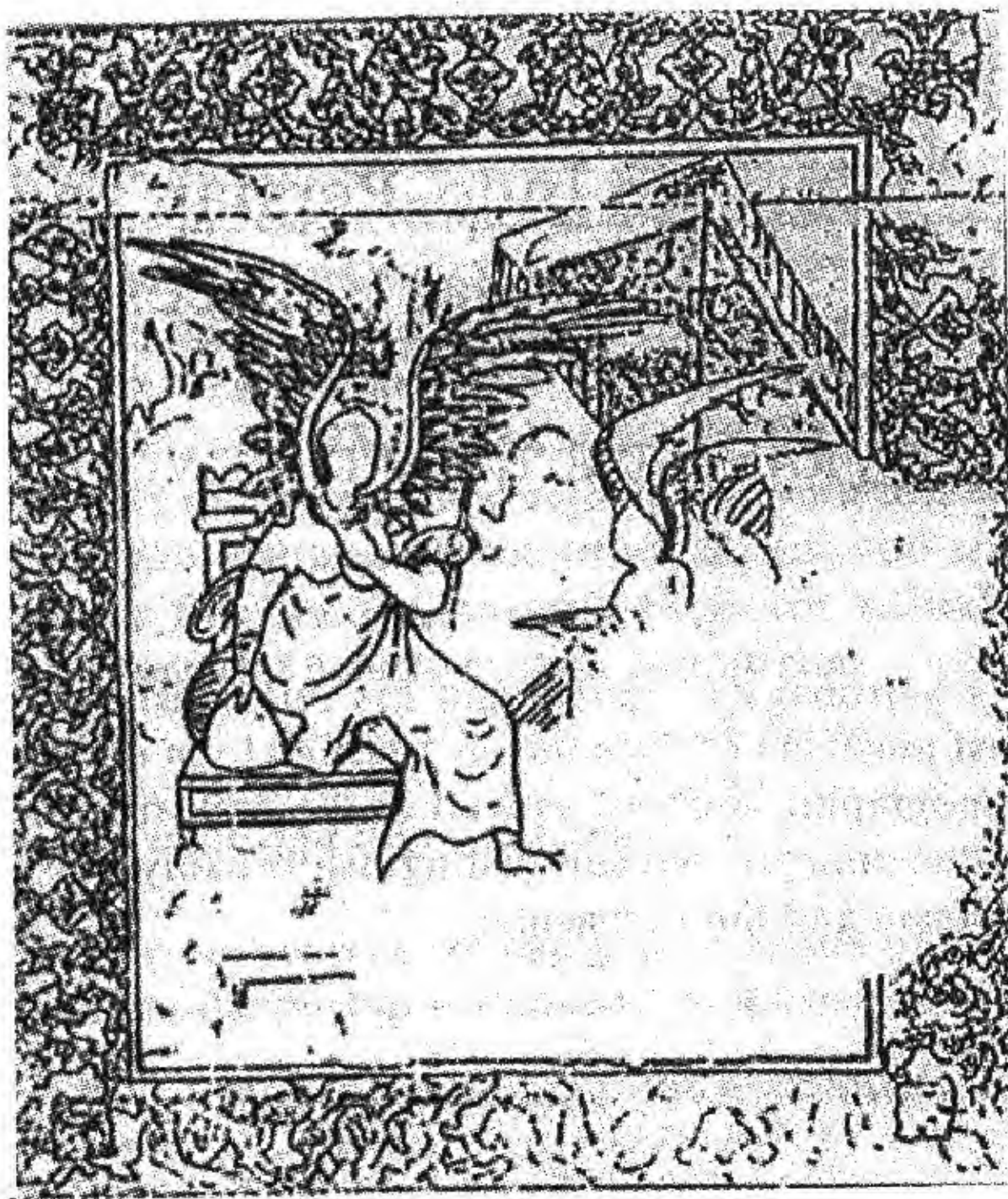






प्लेट तीन





प्लेट चार



प्लेट पाँच